SUPERCHARGE YOUR MIND
सुपरचार्ज योर माइंड

संस्कृत विभाग द्वारा संचालित पन्द्रह दिवसीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम 6. फरवरी 2024 से 22 फरवरी 2024

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, (IQAC) संस्कृत-विभाग की अकादमिक संस्था संस्कृत-समवाय एवं शाईनिंगमून शशि फाउंडेशन के द्वारा पन्द्रह (15) दिवसीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम को संचालित किया। इस विशेष पाठ्यक्रम की रूपरेखा आई आई टी के प्रोफेसरों एवं डीआरडीओ के वैज्ञानिकों के द्वारा बनायी गयी है। यह विशुद्ध अध्यात्मिक और मनुष्य के समग्र विकास पर केन्द्रित है।

प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा

आज पहली कक्षा में पढ़ने वाले छोटे बच्चे से लेकर उच्च शिक्षा और शोधकार्य में लगे छात्र तक आत्मप्रबंधन में असफल और परेशान हैं। पैसे की भूख, तृष्णा, धनलिप्सा, स्वार्थपरायणता इत्यादि के द्वारा भौतिक सुख-सुविधा के साधन होने पर भी मानसिक शान्ति नहीं है। इसलिए यह पाठ्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा के संरक्षण में 6 फरवरी 2024 को प्रारंभ किया गया। यह प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम सभी के लिए था। इसकी कक्षा 15 (पन्द्रह) दिन दो घंटे की हुई। जिसमें विषय के विशेषज्ञों के द्वारा 90 मिनट का व्याख्यान दिया गया। जिसके बाद 30 मिनट शंका-समाधान और डिस्कशन के लिए निर्धारित किया गया था।

उद्घाटन समारोह दिनांक 6 फरवरी 2024

मन में चाहे किसी का भी हो उसमें 80: सत्व गुण है। प्रो. ओम नाथ बिमली

संस्कार-विचार-व्यवहार-आचार जिसका ठीक होता है उसी का बढ़ता है व्यापार-प्रो. के.पी. सिंह

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) संस्कृत समवाय, संस्कृत-विभाग एवं शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन के द्वारा पन्द्रह (15) दिवसीय

दिनांक : 06/02/2024 (मंगलवार) से 21/02/2024 (बुधवार)
समय : 1:00 - 3:00 PM
स्थान : कक्ष संख्या - 127

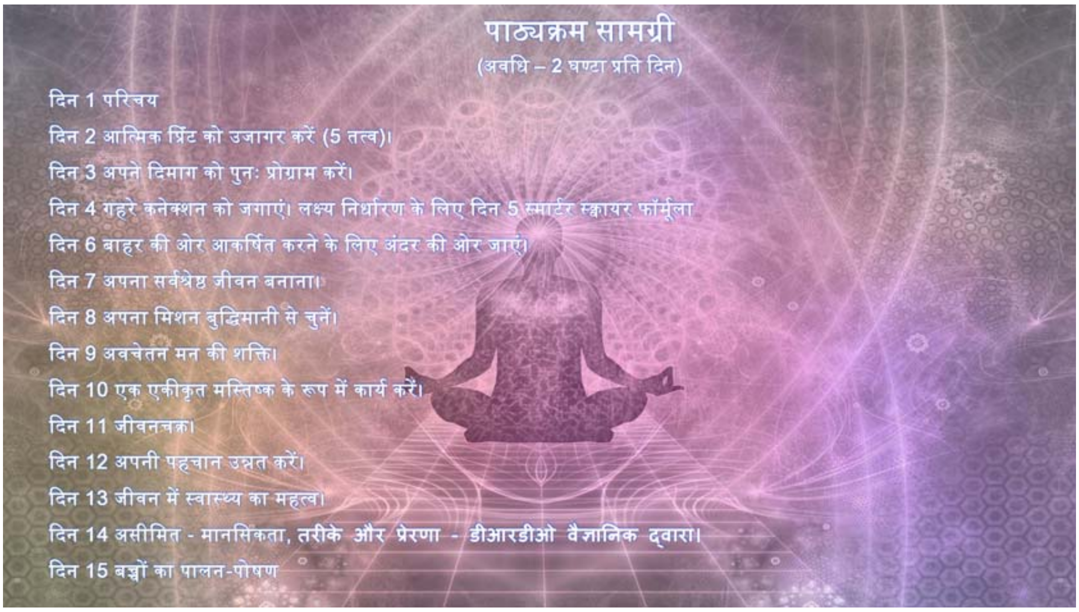

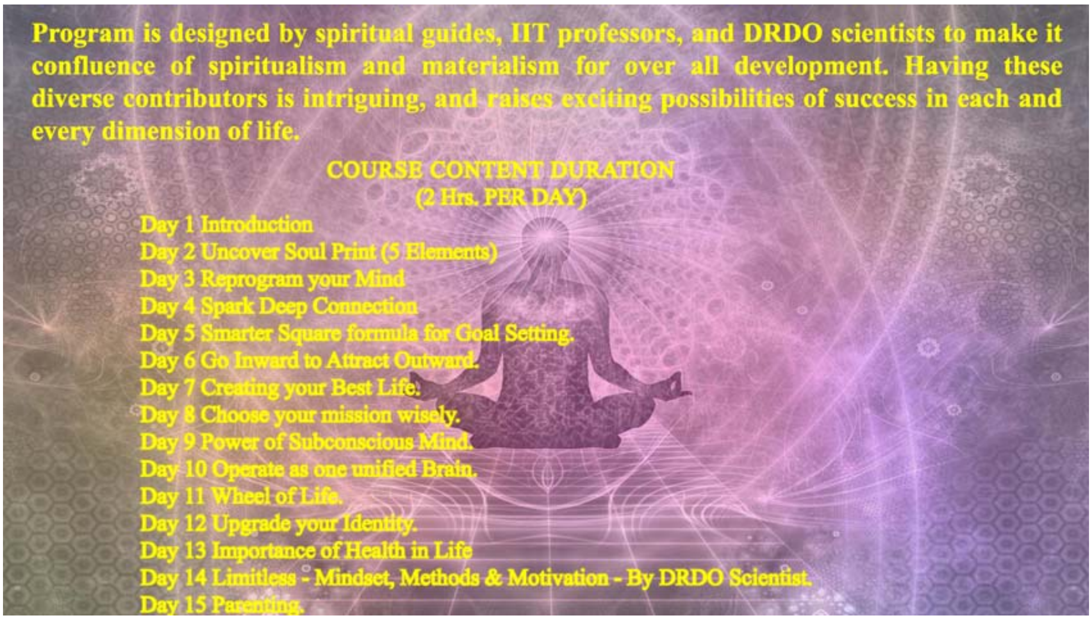

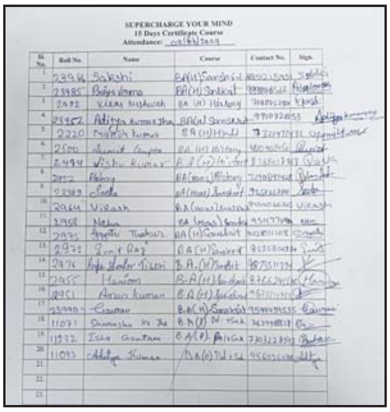
SUPERCHARGE YOUR MIND
15 Days Certificate Course
Attendance: [illegible]

Sl. No.	Roll No.	Name	Course	Contact No.	Sign.
1	23946	Sakshi	BA(H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
2	23985	Priya Verma	BA(H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
3	2492	Vikas Kushwah	BA (H) History	[illegible]	[illegible]
4	23952	Aditya Kumar Jha	BA(H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
5	2220	Manish Kumar	BA (H) Hindi	[illegible]	[illegible]
6	2500	Sumit Gupta	BA (H) History	[illegible]	[illegible]
7	2494	Vishu Kumar	B.A (H) History	[illegible]	[illegible]
8	2452	Abhay	BA (Hons) History	[illegible]	[illegible]
9	23989	Sneha	BA (Hons) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
10	2964	Vikash	BA (Hons) [illegible]	[illegible]	[illegible]
11	2958	Neha	BA (Hons) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
12	2975	Gayatri Thakur	BA (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
13	2971	Sumit Raj	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
14	2976	Rajan Shekhar Tiwari	B.A. (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
15	2955	Hariom	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
16	2951	Aman Kumar	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
17	23990	Gaurav	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
18	11071	Shivanshu Kr. Jha	B.A (P) Pol. Sci	[illegible]	[illegible]
19	11032	Isha Gautam	B.A (P) Pol. Sci	[illegible]	[illegible]
20	11093	Aditya Kumar	B.A (P) Pol. Sci	[illegible]	[illegible]
21					
22					
23					

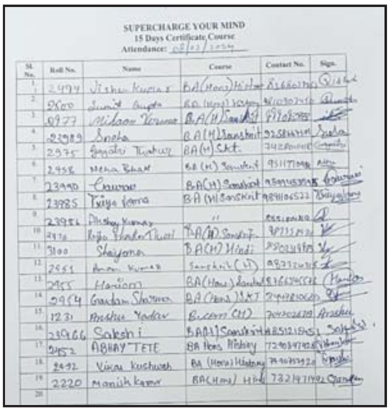
SUPERCHARGE YOUR MIND
15 Days Certificate Course
Attendance: [illegible]

Sl. No.	Roll No.	Name	Course	Contact No.	Sign.
1	2494	Vishu Kumar	BA (Hons) History	[illegible]	[illegible]
2	2500	Sumit Gupta	BA (Hons) History	[illegible]	[illegible]
3	2977	Milan Verma	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
4	23989	Sneha	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
5	2975	Gayatri Thakur	BA (H) Skt.	[illegible]	[illegible]
6	2958	Neha Bhatt	BA (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
7	23990	Gaurav	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
8	23985	Priya Verma	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
9	23956	Akshay Kumar	"	[illegible]	[illegible]
10	2976	Rajan Shekhar Tiwari	B.A (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
11	3100	[illegible]	B.A (H) Hindi	[illegible]	[illegible]
12	2951	Aman Kumar	Sanskrit (H)	[illegible]	[illegible]
13	2955	Hariom	BA (Hons) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
14	2954	Gautam Sharma	BA (Hons) SKT	[illegible]	[illegible]
15	1231	Anshu Yadav	B.com (H)	[illegible]	[illegible]
16	23966	Sakshi	BA (H) Sanskrit	[illegible]	[illegible]
17	2452	ABHAY TETE	BA Hons History	[illegible]	[illegible]
18	2492	Vikas Kushwah	BA (Hons) History	[illegible]	[illegible]
19	2220	Manish Kumar	BA (Hons) Hindi	[illegible]	[illegible]
20					

प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में गांधी भवन के डायरेक्टर प्रो. के. पी. सिंह ने कहा कि भारत ऋषि-मुनियों, संत-महात्माओं की भूमि है। यह त्याग और बलिदान की भूमि है। अगर आपके सामने कोई सम्पन्न और वैभवशाली आदमी होता है तब भी कोई श्रद्धा का भाव नहीं होता वहीं कोई सामान्य सा साधु-संन्यासी होता है तब भी हम सभी श्रद्धानवत हो जाते हैं। क्योंकि उसका त्याग बहुत होता है।

प्रो. के.पी. सिंह ने अपने उद्बोधन की शुरूआत प्राचार्या मैम को संबोधित करते हुए कहा कि जिसने घृणा और तृष्णा पर कंट्रोल किया वही कृष्णा है। उन्होंने अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि श्रीमद्भागवतगीता हमारे समय की उत्पन्न हर प्रोब्लम का साल्युशन देती है। गीता में चार पात्र हैं—धृतराष्ट्र, संजय, कृष्ण और भगवान् अर्जुन। पूरी कथा युद्ध के मैदान की है जो 24 घंटे की है। उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि आज टाइम किसी के पास नहीं है, हम अपने आप मोबाइल हो गए हैं। विश्व से जुड़े हैं। स्क्रीन टच तो है लेकिन ''फिजिकली'' किसी से टच में नहीं है। इसलिए इस तरह के पाठ्यक्रम की जरूरत सभी छात्र-छात्राओं को है। देश और विश्वविद्यालय में 'अमृत काल' चल रहा है। जहां चार हजार से अधिक एप्वाइंटमेंट, दस हजार से अधिक अलग-अलग लेवल के प्रमोशन हुए हैं। उसके बाद सही अर्थों में राम राज्य की परिकल्पना साकार होने जा रही है। सुपरचार्ज योर मांइड के बारे में उन्होंने कहा कि इस तरह के सर्टिफिकेट कोर्स कई कॉलेजों ने शुरू किया है। यह विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। इससे पहले शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन के संस्थापक आचार्य श्री शशि प्रभुपाद जी ने आगामी पन्द्रह दिनों में कैसे पढ़ाएंगे। इस पर संक्षिप्त रूप से प्रकाश डाला। प्रभुपाद जी ने कहा कि मन, बुद्धि और आत्मा को समझने का प्रयास हम आगामी दिनों में करेंगे। मन उड़ती पतंग है। हर एक दिन में अलग अलग कामना है। जब कामनाओं की पूर्ति नहीं होती तो मन अशांत हो जाता है। मन को शांति कैसे प्राप्त होगी। आकाश में बहुत बारे तारे हैं चांद एक है। वही शीतलता प्रदान करता है।

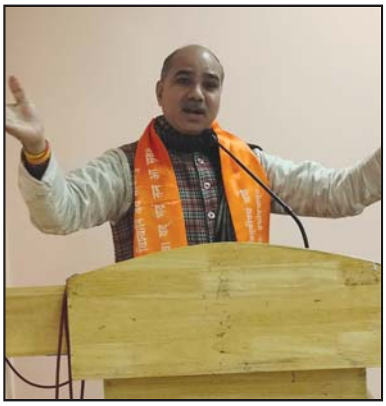

SUPERCHARGE YOUR MIND
समय : 1.00 - 3.00 PM

श्री प्रभुपाद ने कई दृष्टांतों के माध्यम से अपनी बातों को समझाने का प्रयास किया। आहार, भय, निद्रा और मैथुन पाश्विकता है। सबके पास ऊर्जा है। उसका प्युरिफिकेशन करना है। दर्पण साफ नहीं होता तो उसमें तस्वीर साफ नहीं दिखती। दुनिया का मैल और दुख जम जाता है तब 'मन' सही नहीं देख पाता। उन्होंने यह भी कहा कि कुछ लोग प्रिय बात करते हैं लेकिन हम सत्य बातें करेंगे। कई बार मासूम और कोमल सा दिखने वाला आदमी बहुत खूंखार होता है। इसका कारण यह है कि उसकी बाहर की दुनिया ठीक है। परन्तु अंदर की दुनिया ठीक नहीं है। बाहर की दुनिया स्कूल, कॉलेज, और सामाजिक परिवेश से ठीक होता है। वहीं अंदर की दुनिया इस तरह के पाठ्यक्रम से ठीक होती है।

सुपरचार्ज जैसे पाठ्यक्रम सुख, समृद्धि, शान्ति और सफलता के लिए जरूरी है जो शारीरिक और मानसिक मतलब होलेस्टीक डेवलपमेंट से ही आ सकता है। यह इस कार्यक्रम / पाठ्यक्रम का उद्देश्य है। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा ने कहा कि आज का दिन बहुत विशेष है। क्योंकि यह पाठ्यक्रम शुरू हो रहा है जो आपके पाठ्यक्रम से हटकर है। 'मन' की बात सभी शास्त्रों में हैं। आदरणीया प्राचार्या मैम ने आगे कहा कि गीता में विस्तार से 'मन' पर चर्चा हुई है। हम सब जानते हैं कि मन के हारे हार है मन के जीते जीत। मन चंचल है। उसको नियंत्रित करने वाला ही सफलता पा सकता है। मेंटल हेल्थ जिसका ठीक है वही शांति को प्राप्त करेंगे।

अपने उद्बोधन अगले भाग में उन्होंने कहा कि 'पश्चिम' वाले हमारी तरफ आ रहे थे और विडम्बना देखिए कि हम सभी अन्धानुकरण करने लगे थे। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन के अंत में 22 जनवरी को अयोध्या में नवनिर्मित भव्य, दिव्य राममंदिर में भगवान् की प्राणप्रतिष्ठा का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 22 जनवरी को नया इतिहास लिखा गया। 26 जनवरी की तरह ही 22 जनवरी भी हमारे मानस में अंकित हो गया। यह कितनी दुखद बात है कि हमारे दो इतिहास पुरुष राम, कृष्ण हैं। उसमें से भगवान राम तम्बू में थे। इससे पहले इस उद्घाटन समारोह की शुरुआत दीपप्रज्वलित करके एवं मंगलाचरण से किया गया। उसके बाद स्वागत

भाषण संस्कृत विभाग के प्रभारी प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा ने दिया। उन्होंने कहा कि यह विशेष 15 दिवसीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम प्राचार्या मैम के वात्सल्य और स्नेह का परिणाम है। पिछले सेमेस्टर में ही इसको कराने की योजना थी जो तात्कालिक परिस्थितियों के कारण पूरी नहीं हो सकी। इस पाठ्यक्रम में इसी संगोष्ठी कक्ष में प्रतिदिन दो घंटे की कक्षा होगी, जिससे निश्चित रूप से भाग लेने वालों की मानसिक शक्ति मजबूत होगी। पहले भी प्राचार्या मैम संस्कृत विभाग से स्वाभाविक स्नेह के कारण संस्कृत के कार्यक्रम में आती रही हैं। इस बार फिर से उनके आशीर्वाद से हम सब यह 15 दिनों का यह पाठ्यक्रम शुरू कर पा रहे हैं।

इस उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन संस्कृत विभाग के युवा विद्वान प्राध्यापक डॉ. कुलदीप कुमार ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। धन्यवाद ज्ञापन संस्कृत विभाग के वरिष्ठ आचार्य प्रो. दिलीप कुमार झा के द्वारा किया गया। प्रो. दिलीप कुमार झा ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि प्रो. के.पी. सिंह बहुत ही मुखर, प्रेरक वक्ता है। DRDO से दिल्ली विश्वविद्यालय के लाइब्रेरी साइंस विभाग और गांधी भवन के.पी. सर के बहुआयामी व्यक्तित्व को परिलक्षित करते हैं। मन का संबंध चन्द्रमा से है और गत वर्ष जब दक्षिण ध्रुव पर भारत का चन्दयान, प्रज्ञान रोवर जिस जगह उतरा उसका नाम 'शिवशक्ति प्वाइंट' रखा गया। उसी तरह प्राचार्या मैम शक्ति स्वरूप हैं पीजीडीएवी के लिए। उनका विशेष धन्यवाद। इस अवसर पर कॉमर्स विभाग की डॉ. शशि नन्दा जी ने एक कविता का पाठ किया। इस खास कार्यक्रम में हिंदी विभाग के प्रो. मनोज कैन, प्रो. बन्ना राम, डॉ. अरुण मिश्रा, गणित विभाग के शालिनी ठाकुर और दिलीप कुमार सहित आधा दर्जन विभाग के दो दर्जन से अधिक प्राध्यापकों ने अपनी उपस्थिति से सफल बनाया।

समापन समारोह

मन चाहे किसी का भी हो उसमें 80 प्रतिशत सत्त्व गुण है—प्रो. ओम नाथ बिमली

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय के आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ, (IQAC) संस्कृत-विभाग की अकादमिक संस्था, संस्कृत-समवाय एवं शाईनिंगमून शशि फाउंडेशन के द्वारा पन्द्रह (15) दिवसीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम "सुपरचार्ज योर माइंड" के समापन समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दू अध्ययन केंद्र के निदेशक और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. ओम नाथ बिमली का 22 फरवरी को कॉलेज के पुराने सेमिनार हॉल में मुख्य अतिथि के रूप में आगमन हुआ था। इस समापन समारोह की शुरूआत मंगलाचरण, दीपप्रज्वलन एवं महर्षि दयानंद सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ हुआ। संस्कृत विभाग के प्रभारी आचार्य प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा ने स्वागत भाषण में कहा कि पिछले 15 दिनों से चल रहे, इस पाठ्यक्रम का आज समापन हो रहा है, निश्चित ही इस पाठ्यक्रम / कार्यशाला से हमारे बच्चे लाभान्वित हुए होंगे। आदरणीया प्राचार्या मैम की इच्छा थी कि जिस तरह से इस पाठ्यक्रम के उद्घाटन के दिन गांधी भवन के निदेशक आदरणीय प्रो. के.पी. सिंह सर का आगमन मुख्य अतिथि के रूप में हुआ था। उसी तरह से समापन समारोह भी विशिष्ट अतिथि

के सानिध्य में हो, इसलिए प्राचार्या मैम ने गुरुवर आदरणीय बिमली सर का नाम सुझाया, और तत्काल फोन भी किया। यह हम सब का सौभाग्य रहा कि बहुत अधिक व्यस्तता के बाद भी आदरणीय सर ने इस समापन सत्र में आने की कृपा की। आप सब जानते हैं कि दिल्ली विश्वविद्यालय में इंटरव्यू चल रहे हैं, आदरणीय सर जिस कॉलेज के चेयरमैन हैं वहां अभी भी इंटरव्यू चल रहा है। आज भी सर, एक सलेक्शन कमिटी से ही यहां आएं हैं। जिनकी प्रेरणा, संरक्षण और आशीर्वाद से यह 15 दिवसीय पाठ्यक्रम संस्कृत विभाग ने किया। ऐसी प्राचार्या मैम साक्षात् पूर्णाहुति सत्र में उपस्थित हैं। आज अतिकाल हो गया है, इसलिए ज्यादा कुछ न कहते हुए सभी का विभाग की तरफ से स्वागत करते हुए अपनी बात को समाप्त करता हूँ।

इस अवसर पर महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. कृष्णा शर्मा मैम ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि मोनिका जी जब इस्कॉन से आई और उन्होंने जिस तरह से कोर्स के बारे में बताया उससे मुझे लगा कि यह कोर्स बच्चों के लिए उपयोगी साबित होगा। उन्होंने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करें? मन पर नियंत्रण कैसे हो सकता है? आपके जो आदर्श होंगे उसी के अनुरूप आपका आचरण होगा। आपके आदर्श फिल्म स्टार हैं या स्वामी विवेकानंद हैं? यह आप पर निर्भर करता है।

प्राचार्या मैम ने कुछ महीने पहले हुए संस्कृत विभाग में स्थायी नियुक्ति के लिए जो इंटरव्यू हुए तब बिमली सर द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों की चर्चा करते हुए कहा कि बिमली सर जिस तरह से कंडिडेट से प्रश्न पूछते थे, उनका वह तरीका मुझे बहुत प्रभावित किया। किसी भी कंडिडेट को हतोत्साहित नहीं करते थे। आज भी इतनी व्यस्तता के बाद भी आएं, आते ही मेरे 'फादर इन लॉ' की चर्चा की। इससे यह सिद्ध होता है कि बिमली सर सच में श्रद्धा के योग्य हैं। जिनके बारे में संस्कृत विभाग के आचार्य बताया करते थे।

शाइनिंग मून शशि फाउंडेशन के तीनों शिक्षकों, शशि प्रभु, मोनिका शर्मा, एवं श्रवण कुमार सिंह की अध्यापन कार्य को प्राचार्या मैम ने सराहा।

प्रोफेसर बिमली सर ने सबसे पहले अपने भाषण की शुरूआत में कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि इस पीजीडीएवी महाविद्यालय का, इस महाविद्यालय की प्राचार्या का, संस्कृत

विभाग के आचार्यो को मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूं जिन्होंने मुझे इस महनीय एवं महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम के समापन सत्र में मुझे आमंत्रित किया। मैं विद्यार्थियों की दृष्टि से ही इस विषय पर अपनी बात रखूंगा। मुझे यह विषय बहुत ही समसामयिक एवं प्रासंगिक लगा। ''सुपरचार्ज योर माइंड'' इस विषय के कई अलग-अलग परिप्रेक्ष्य हो सकते हैं, लेकिन मैं ''भारतीय दर्शन'' के परिप्रेक्ष्य में ही अपनी बात कहूंगा।

फिर प्रो. दिलीप सर को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मैं चला समय पर लेकिन समय पर नहीं पहुंच सका। वसीम बरेलवी का शेर भी सुनाया।

'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।' इसका मतलब है कि मन ही मनुष्य के बंधन और शाश्वत शांति यानि मोक्ष का भी कारण है। कैसा मन बंधन का कारण है और कैसा मन मोक्ष का कारण है? मन जब सुपरचार्ज हो जाता है तब वह अपने लक्ष्य तक पहुंचता है। मन शुद्धिकरण तक पहुंचता है तब ही वह आपको अपने गन्तव्य तक पहुंचा सकता है। जब भारतीय अध्यात्म की बात होगी तब मन का सुपरचार्ज होने का मतलब है मन का पूरा सात्त्विकरण होना। एक है आत्मा और आत्मा के अतिरिक्त जो कुछ भी है वह शरीर है। एक प्रकृति है दूसरा पुरुष है। प्रकृति तीन गुणों से बना हुआ है। प्रकृति त्रिगुणात्मक है और पुरुष निर्गुण है।

यह संसार प्रकृति के ही भिन्न-भिन्न रूप है। जैसे मिट्टी से बना घड़ा, गणेश जी की मूर्ति, दीया। इसी तरह प्रकृति के ही भिन्न-भिन्न रूप हैं। एक रूप है मन। इस तरह संसार त्रिगुणात्मक है, क्योंकि प्रकृति से बना है। प्रकृति से ही मन निर्मित है, इसलिए मन भी त्रिगुणात्मक है। वस्तुएं प्रकृति से बनी हैं लेकिन कुछ वस्तुएं ऐसी हैं जिसमें 95% तमस हैं शेष रजस् और सत्त्व है। इस तरह यह पूरी तरह से तामसिक पदार्थ है, लेकिन मन जो है वह प्रकृति का सात्त्विक पदार्थ है। मन में चाहे किसी का भी हो उसमें 80% सत्त्व है लेकिन पत्थर में 95 प्रतिशत तमस है। इसलिए मन चाहे महर्षि दयानंद का हो या विवेकानंद का या फिर हिटलर या मुसोलिनी का। अब एक उदाहरण से समझिए कि हिटलर और गांधी के मन में क्या अंतर है। उसमें यही अंतर है कि 20 प्रतिशत जो मन है उसमें से 10 प्रतिशत को गांधी ने सात्त्विक कर लिया। इस तरह गांधी के पास 90% सात्त्विक मन है वहीं 5 प्रतिशत

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली

तामसिक और 5 प्रतिशत राजसिक मन है। जबकि हिटलर के पास 80 प्रतिशत सात्त्विक मन तो था लेकिन 20 में से 10 प्रतिशत को तामसिक बना लिया, जिससे हिटलर के पास 80 प्रतिशत सात्त्विक मन और 15 प्रतिशत तामसिक एवं शेष 5 प्रतिशत राजसिक मन बना लिया। इस तरह गांधी ने अपने मन को सुपरचार्ज कर लिया वहीं हिटलर ने अपने मन को और डिस्चार्ज कर लिया। सुपरचार्ज माइंड आत्म (सेल्फ) के साथ कनेक्ट करता है। आत्मा क्या है। आत्मा प्योर एवेएर्नेश है। सच्चिदानन्द है प्योर (Pure) सत्ता है।

मनुष्यता के सामने तीन प्रकार के दुःख आते हैं। तीन प्रकार के दुःख है–आदिदैविक, आदिभौतिक एवं आध्यात्मिक। दुख से कौन सबसे ज्यादा पीड़ित होता है जिसका माइंड सेल्फ से डिस्कनेक्टेड होता है। इसलिए मन का आत्मा से कनेक्शन जरूरी है। अब माइंड को ऐसे बनायेंगे तब ही मन एव मनुष्याणां.... हो सकता है।

मन को भारतीय संदर्भों में समझने की जरूरत है। आयुर्वेद, बौद्ध दर्शन, और योग दर्शन, इन तीनों में 'चतुर्व्यूह' का प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में जो चतुर्व्यूह है उसमें पहला व्यूह है–रोग।

दूसरा व्यूह है रोग का कारण है। अगर कारण नहीं होता तो हर जगह रोग ही रोग होता। जहाँ कारण होता है वहां कार्य होता है। इसलिए रोग है और उसका कोई न कोई हेतु होता है।

तीसरा व्यूह है रोग निरोध। रोग हो लेकिन रोग का कोई न कोई कारण है लेकिन निरोध का कोई उपाय न हो तो रोग पर नियंत्रण नहीं हो सकता।

चौथा व्यूह है रोग निरोध के उपाय। यह आयुर्वेद का चतुर्व्यूह है। बौद्ध दर्शन का चतुर्व्यूह क्या है? चार आर्य सत्य है। दुःख है, दुःख हेतु है। दुःख निरोध है दुःख निरोध के उपाय हैं। उसी तरह योग दर्शन में चार व्यूह माने जाते हैं उसमें पहला है हेय, हेय मतलब त्याज्य, दूसरा है हेय का हेतु, हेय का हान, हेय के हान का उपाय।

शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन के शशि प्रभु और मोनिका शर्मा ने पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज में हुए 15 दिनों के अनुभव को बताया।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रो. दिलीप कुमार झा सर ने किया। उन्होंने कहा कि हास्य विनोद के क्रम में हमने आज के मुख्य अतिथि और वक्ता प्रो. बिमली सर से कहा कि आजकल

आप काफी व्यस्त चल रहे हैं तो उन्होंने कहा कि व्यस्त हूँ लेकिन अस्त-व्यस्त नहीं हूँ। आप जैसे मनीषी कभी अस्त-व्यस्त नहीं हो सकते। मन के बहुआयामी परिप्रेक्ष्य का उल्लेख करते हुए बौद्ध दर्शन, योग दर्शन, और आयुर्वेद के माध्यम से जिस तरह आपने बताया है, निश्चित रूप से हमारे बच्चे आपके व्याख्यान से लाभान्वित हुए होंगे। प्रो. दिलीप झा सर ने कहा कि मोबाइल केवल इंफार्मेशन है। नॉलेज और इंफार्मेशन में अंतर है इतना समझ लीजिए सूचना ज्ञान नहीं है। मन के अनुरूप आदर्श चुनना चाहिए।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुलदीप कुमार ने किया। संचालन के क्रम में डॉ. कुलदीप ने कहा कि जिस तरह गुरुवर प्रो. ओम नाथ बिमली कहते हैं कि हंसराज कॉलेज उनका कॉलेज है, तो मैं यहां यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि अब पीजीडीएवी कॉलेज भी आपका ही कॉलेज है। आदरणीय दिलीप झा सर आपके क्लॉसमेट मित्र हैं, और आदरणीय गिरिधर सर से लेकर अंतिम पीढ़ी का मैं स्वयं आपका शिष्य हूँ। इसलिए अब पीजीडीएवी भी आचार्य परम्परा से आपका ही कॉलेज है।

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि..ने संस्कृत-समवाय, संस्कृत-विभाग तथा IQAC, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय एवं शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 फरवरी 2024 से 22 फरवरी 2024 तक आयोजित "SUPERCHARGE YOUR MIND" इस पन्द्रह दिवसीय (30 घण्टे) प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम में उत्साहपूर्वक पाठ्यक्रम प्राध्यापक/अतिथि प्राध्यापक के रूप में भाग लिया। हम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

संयोजक	सह-संयोजक	समन्वयक	प्राचार्या
प्रो. गिरिधर गोपाल शर्मा	श्री शाइनिंग शशि	प्रो. राकेश कुमार	प्रो. कृष्णा शर्मा
प्रभारी, संस्कृत विभाग	शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन	IQAC	पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय

पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, नेहरू नगर, नई दिल्ली
संस्कृत-समवाय, संस्कृत-विभाग तथा IQAC, पी.जी.डी.ए.वी. महाविद्यालय
एवं शाइनिंगमून शशि फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में
पन्द्रह दिवसीय प्रमाणपत्रीय पाठ्यक्रम
पाठ्यक्रम का नाम - SUPERCHARGE YOUR MIND
दिनांक : 06/02/2024 (मंगलवार) से 22/02/2024 (बृहस्पतिवार)
विषयः भारतीय दर्शन एक जीवन दृष्टि
समापन समारोह : पुराना संगोष्ठी कक्ष
समय : 12:30
मुख्य अतिथि एवं वक्ता
अध्यक्षता

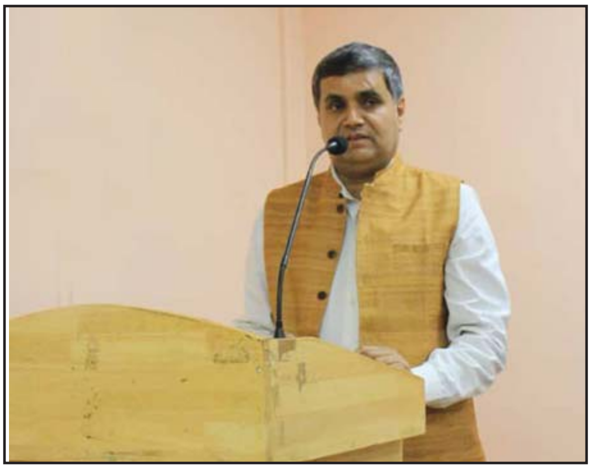

पाठ्यक्रम का नाम - SUPERCHARGE YOUR MIND